Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar Madhubani
Mail ID:- rajgopal1755@gmail.com

Locke : Primary and Secondary Qualities

(लॉक : मूलगुण और उपगुण)

गुण द्रव्य की वह शक्ति है जिसके कारण आत्मा में प्रत्यय उत्पन्न होती है। द्रव्य से साक्षात संपर्क नहीं होता है। हमारा साक्षात संपर्क द्रव्य से नहीं बल्कि द्रव्य के गुणों से होता है। इस प्रकार से गुणों के आधार या आश्रय को द्रव्य कहते हैं। इन्द्रियों से हम गुणों को प्रत्यक्ष करते हैं। इसके आधार या आश्रय के रूप में द्रव्य की सत्ता को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार से गुणों की सत्ता हम इसलिए स्वीकार करते हैं कि इसकी सत्ता का हमें प्रत्यक्षज्ञान होता है परन्तु द्रव्य की सत्ता हम इसलिए स्वीकार करते हैं कि गुण निराधार नहीं रह सकता है।

किसी द्रव्य के स्वभाव या धर्म को ही उस वस्तु का गुण कहा जाता है। संसार में दो प्रकार के द्रव्य हैं चेतन और अचेतन। इनके अलग-अलग धर्म हैं। चेतन अचेतन के मानसिक प्रत्यय को उत्पन्न करने वाला गुण ही है। अतः विचार या मानसिक प्रत्यय को उत्पन्न करने वाली शक्ति का नाम गुण है। गुण किसी द्रव्य या वस्तु के धर्म हैं। परन्तु वस्तु का धर्म स्वतंत्र या परतंत्र दोनों हो सकता है। इसी आधार पर लॉक ने गुण के दो प्रकार माना है। (1) मूल गुण (2.) उपगुण। इनकी चर्चा समीचीन है।

Scanned with CamScanner

(1.) मूल गुण (Primary quality) :- मूल गुण किसी द्रव्य या वस्तु का अपना स्वतंत्र धर्म या स्वभाव है। प्रत्येक पदार्थ में कुछ गुण ऐसे होते हैं जो हर स्थिति में उस पदार्थ के साथ बने रहते हैं। इसे वस्तु या पदार्थ का अविच्छेद्य धर्म भी कहते हैं। क्योंकि इसे वस्तु से अलग नहीं किया जा सकता है। इसे भौतिक द्रव्य का अनिवार्य लक्षण कहा जाता है। ज्ञानेन्द्रियों का संपर्क वस्तुओं के मूल गुणों से होता है जिससे संवेदना उत्पन्न होता है। संवेदनाओं के कारण हमारी आत्मा में प्रतिबिम्ब उत्पन्न होता है। इन्हीं प्रतिबिम्बों को प्रत्यय कहते हैं। ये पदार्थ से अविभाज्य रूप से जुड़े होते हैं। ये निम्न हैं- घनत्व, विस्तार, आकार, आकृति, गति, विराम, संख्या आदि मूलगुण हैं। ये वस्तुनिष्ठ हैं। पदार्थ के इन प्राथमिक गुणों के कारण ही हमें कोई वस्तु गोल तो कोई वृत्ताकार, कोई गति में तो कोई स्थिर तथा कोई दो तो कोई चार नजर आती है। मूल गुण स्वतंत्र है। हम देखें या ना देखें वस्तु का आकार अवश्य होता है। इस प्रकार से ज्ञान की दृष्टि से मूलगुण परतंत्र है, परन्तु सत्ता की दृष्टि से स्वतन्त्र है।

(2.) उपगुण (Secondary Quality) :- इन्हें द्वितीयक गुण भी कहते हैं। इसका ज्ञान हमें परोक्ष रूप से होता है। इसके अन्तर्गत रंग, स्वाद, गंध, शीतलता, उष्णता आदि पाँच ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त होने वाले गुण आते हैं। इन उपगुणों का आधार हमारी चेतना है न कि पदार्थ। उपगुण वस्तुओं में नहीं पाये जाते हैं। ये आत्मनिष्ठ हैं। आत्मनिष्ठ होने के बावजूद उपगुणों को उत्पन्न करने की शक्ति हमारी आत्मा में नहीं है, बल्कि वस्तुएँ के मूलगुणों में है। इस प्रकार से मूल गुणों का आधार वस्तु है तो उपगुणों का आधार मूलगुण है। जहाँ मूलगुण स्वतंत्र है वहीं उपगुण परतंत्र है। उपगुण अपने उत्पत्ति और ज्ञान दोनों

Scanned with CamScanner

दृष्टिकोण से परतंत्र है। इनकी उत्पत्ति मूलगुणों के कारण होती है। तथा इसका ज्ञान भी ज्ञाता पर निर्भर है। रूप संवेदना है जो ज्ञाता पर निर्भर है। यदि देखने वाला न हो तो रूप की सत्ता में सन्देह है। इस प्रकार से लॉक का कहना है कि उपगुण वस्तु का धर्म नहीं, वरन मूलगुणों के माध्यम से उत्पन्न संवेदना है। बर्फ के टुकड़े का गोल आकार न हो तो इसके उजले रूप का ज्ञान नहीं होगा इस प्रकार विभिन्न संवेदनाओं को उत्पन्न करने वाली शक्ति का नाम उपगुण है।

अपनी अपनी संवेदना अनुसार सफेदी, लालिमा, मीठापन, दुर्गन्ध आदि उपगुणों को उत्पन्न नहीं कर सकती है। उपगुणों का संवेदन वस्तुओं के वास्तविक गुणों के द्वारा होती है, परन्तु एक ही वस्तु जैसे मिठाई अधिकांश किसी को अधिक मीठा तो किसी को कम मीठा लगती है। इससे प्रमाणित है उपगुण आत्मनिष्ठ होते हैं। लॉक ने मूलगुणों को असंवेद्य (Unsensible) कहा है वहीं उपगुणों को (Sensible) कहा है। उपगुण के प्रत्यय बाह्य वस्तुओं को प्रतिबिम्बित नहीं करते हैं। ये बाह्य वस्तुओं की ओर केवल संकेत करते हैं। उपगुणों का संबंध हमारी इन्द्रियों से है। बुद्धि से नहीं। रूप, रस आदि की संवेदनाएँ इन्द्रियों से होती है। परन्तु मूलगुणों की संबंध हमारी बुद्धि से है। हमारी बुद्धि मूल गुणों को द्रव्य का आवश्यक, अविच्छेद्य धर्म मानती है। लॉक के अनुसार मूलगुण निरपेक्ष है वहीं उपगुण सापेक्ष है। उपगुण संवेदनाएँ होने के कारण ज्ञाता पर आश्रित है। जहाँ मूल गुण किसी वस्तु का वास्तविक धर्म है, वहीं उपगुण संवेदनाएँ होने के कारण बदलता रहता है इसलिए इसे वस्तु का परिवर्तित धर्म कहते हैं।

निष्कर्ष :- लॉक के मूलगुण और उपगुण के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि इनके मूलगुण और उपगुण की अवधारणा विवादास्पद है। फिर भी इसका दर्शन के क्षेत्र मे दूरगामी प्रभाव पड़ा

इन्हीं के आधार पर प्रतिनिधित्ववादी सिद्धान्त का सूत्रपात हुआ। वे गुणों का अस्तित्व मानते हैं इन्हीं के आधार पर मैं द्रव्य एवं ज्ञाता की सत्ता को स्वीकार करते हैं। दूसरी ओर मूलगुण स्वतंत्र है तो इसका ज्ञान भी स्वतंत्र होना चाहिए लेकिन गुण की सत्ता द्रव्य के आश्रित कर दिया गया है। वस्तुतः वे द्रव्य की कल्पना के लिए गुणों की वास्तविक सत्ता स्वीकार करते हैं। यदि गुण प्रत्यक्ष है तो इसका आधार द्रव्य भी प्रत्यक्ष होना चाहिए। लेकिन लॉक द्रव्य को अनुमेय मानते हैं। इस प्रकार से गुणों वास्तविक स्वरूप में काफी मतांतर दृष्टिगत है। फिर लॉक का गुण सिद्धान्त आगे के दार्शनिकों के लिए एक दृष्टिकोण दिया जिसके आधार पर प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्ववादी सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ। यह सिद्धान्त के खंडन या मंडन के आधार पर अनुभववादी सिद्धान्त का विस्तृत आधार तैयार हुआ।